International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 7, Issue 04, April 2020
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

हिंदी उपन्यास साहित्य में स्त्री –विमर्श

डॉ वन्दना[1], असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, हर्ष विद्या मंदिर पीजी कॉलेज रायसी, हरिद्वार

डॉ विक्की[2],

दीपा त्यागी[3]

सारांश–

आज स्त्री शोषण पर टिके पितृसत्तात्मक परिप्रेक्ष्य को चुनौती दे रही है । स्त्री मुक्ति से उत्पन्न आंदोलन और उससे उपजे सवालों का एक जो नया रूप उभर कर आया है, वह स्त्री विमर्श हैं। स्त्री मुक्ति से तात्पर्य केवल देह से नहीं, बल्कि स्त्री मुक्ति से अर्थ सामाजि, सामाजिक, राजनीतिक आर्थिक और स्वतंत्र निर्णय लेने के अधिकार से हैं। स्त्री जो वर्षो की गुलामी को सहती आ रही है उसे गुलामी से मुक्त करने समाज के हाशिये से उसे मुख्यधारा में शामिल करने की दिशा में भी स्त्री विमर्श से पहल की जाती है। स्त्री विमर्श के उदेश्य को उद्घाटित करते हुए ममता कालिया लिखती है ''मुख्यधारा में शामिल हुए बिना केवल निजी समस्याओं का अरण्य रोदन स्त्री विमर्श का लक्ष्य नहीं''। स्त्री खुद को समाज में स्थापित करने की दिशा में अग्रसर है

कुंजी शब्द–साहित्य, उपन्यास,स्त्री –विमर्श ,

प्रस्तावना

पुरूष की जन्मदात्री और उसके निर्माण विकास की उत्तरदायी होने के कारण स्त्री का स्थान पुरूष से ऊँचा है और इस उच्चता का बनाये रखने के लिए पुरूष से प्रतिद्वंद्विता करने की आवश्यकता नहीं है बल्कि अपने खोये हुए अधिकार का पुनः पाने की आवश्यकता है पर यह सबसे बड़ी विडम्बना है कि पुरूष के जन्म का कारण स्त्रियाँ हैं और स्त्रियों के बहुआयामी शोषण और उनके साथ होने वाले अत्याचारों का कारण पुरूष ही हैं। सृष्टि में स्त्रियों की संख्या पुरूषों क समान होने के बाद भी उन्हें गौण स्थान दिया गया। इसलिए रामकालीन लेखन में स्त्री विषयक दृष्टि विभिन्न बिन्दुओं पर केन्द्रित है स्त्रियों के साथ होने वाले दोयम दर्जे का व्यवहार, स्वतंत्रता

एवं अपने अधिकारों का पाने के लिए स्त्री–मुक्ति संघर्ष , स्त्री का वस्तु के रूप में समझने पर नारियों का हस्तक्षेप और अंत में स्त्री का मानवी या मानुषी समझना सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु है।

माना जाता है कि स्त्री साक्षात शाक्ति हैं। सृष्टि की रचना और उसके विकास सत्री का महत्वपूर्ण स्थान है। सौंदर्य, दया, ममता, भावना, संवेदना, करूणा, क्षमा, वात्सल्य त्याग और समर्पण स्त्री के गहने हैं। इसीलिए उसे देवी कहकर पूज्य माना गया है–'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।' जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता बसते हैं। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक स्त्रियों की स्थिति में काफी बदलाव आए हैं। वैदिक गुण की नारी उन्नत एवं परिष्कृत जान पड़ती है, ऋग्वेद में स्त्री को यज्ञ में ब्रह्मा का स्थान ग्रहण करने योग्य बताया गया है। रामायण और महाभारत काल में भी स्त्रियां विदूषी होती थीं। परन्तु आधुनिक युग में स्त्री को अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है।

अध्ययन का उदेश्यः–

हिंदी उपन्यास में स्त्री विमर्श को जानने के लि, नीचे कुछ उदेश्य सूचीबद्ध किये गये हैः–

1 हिंदी उपन्यास साहित्य में स्त्री विमर्श का अध्ययन करना।

2 स्त्रियों के पारिवारिक क्षेत्र पर विमर्श करना।

3 स्त्रियों के सामाजिक क्षेत्र पर विमर्श करना।

4 स्त्रियों के शैक्षिक क्षेत्र पर विमर्श करना।

5 स्त्रियों के धार्मिक क्षेत्र पर विमर्श करना।

6 स्त्रियों के आंतरिक व बाहरी जिम्मेदारी और कर्तव्यों पर विमर्श करना

अध्ययन की सीमाः–

हमारे अध्ययन का विस्तार केवल हिंदी उपन्यासों साहित्य में स्त्री विमर्श तक ही रहेगा।

अनुसन्धान क्रिया विधिः–

यह अध्ययन पाठय, आलोचनात्मक, मूल्याकंनात्मक, वर्णात्मक, विश्लेषणात्मक और व्याख्यात्मक विधियो का उपयोग करते हुए, माध्यमिक स्त्रोतो के माध्यम से हिंदी उपन्यास साहित्य में स्त्री विमर्श पर सम्पूर्ण अध्ययन पर केन्द्रित है।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)

<u>डेटा संग्रहः–</u>

शोध अध्ययन के लिए प्राथमिक और द्वितीयक स्त्रोतो से डेटा एकत्र किया जाता है जिसका विश्लेषण किया जाएगा। द्वितीयक स्त्रोत वह स्त्रोत है जो हिंदी उपन्यास साहित्य में स्त्री विमर्श सन्दर्भ पुस्तको सहित पुरानी या गैर–मूल जानकारी प्रदान करता है। माध्यमिक स्त्रोतो मे जीवनी, लेखक के कार्यो के महत्वपूर्ण अध्ययन, शोध पत्र, और शोध निबन्ध, शोधगंगा, ई–ससांधन एव अन्य वेबसाइट भी शामिल है।

साहित्य में स्त्री–विमर्श

आज की नारी पुरूष के समान ही जीवन के विभित्र क्षेत्रों में कार्यरत है, इसके बावजूद वह अधिक जिम्मेदार और अधिक असुरक्षित भी अनुभव करती है। दिन भर नौकरी के बाद उसे पारिवारिक दायित्व भी निभाने पड़ते हैं।

पुरूषों की निगाहों में तो स्त्रियाँ सदैव उपेक्षिता हो रही है। इस सम्बंध में मैत्रेयी पुष्पा का वक्तव्य देखें ''पुरूष के लिए सबसे बड़ी चुनौती स्त्री ही है। उसको वश में करने के लिए वह जिंदगी भर न जाने कितने प्रयास करता है कि किसी तरह औरत के वजूद को तोड़ सके।''

स्त्रियां मानती हैं कि पुरूषों ने उनके स्वतंत्र व्यक्तिव निर्माण में सहायक नहीं है। क्षमा शर्मा शिकायत करती हैं कि, ''पुरूष पचास औरतों के साथ संबंध रखकर अच्छा कहला सकता है, अपने घर लौट सकता है। स्त्री एक प्रेम करके चरित्रहीन कही जा सकती है और अफसोस यह है स्त्री की उस छवि को बनाने में न धर्मशास्त्र पीछे है न ही साहित्य''। इसके बावजूद आज की स्त्री अपनी पहचान बना रही है। आज का स्त्री –विमर्श, स्त्री के शोषण से मुक्ति चाहता है, ताकि वह स्वतंत्रता के साथ जी और सोच सके। वह पूर्ण स्वाधीन हो और उसके हाथ में निर्णायक शक्ति हो। कात्यायानी के अनुसार ''स्त्री विमर्श अथवा नारीवाद पुरूष व स्त्री के बीच नकारात्मक भेदभाव की जगह स्त्री के प्रति सकारात्मक पक्षपात की बात करता है। वस्तुतः इस रूप में देखा जाए तो स्त्री–विमर्श अपने समय और समाज के जीवन की वास्तविकताओं तथा संभावनाओं की तलाश करनेवाली दृष्टि है।'' स्त्री–चिंतन आज विश्व चिंतन की बहसे में सबसे सशक्त चिंतन है। महिला संबंधित कानून के विशेषज्ञ और लेखक अरविंद जैन कहते हैं कि ''आज के समय में औरतें बदलीं, पुरूष नहीं बदले। परिवार संस्था और विवाह संस्था यथावत है। परिवार में बहु की स्थिति बहुत ज्यादा नहीं बदली है। आज भी उसे संपत्ति का अधिकार नहीं है न मायके में, न ससुराल में।

हिंदी साहित्य में अनेक परिवर्तन देखे जा सकते है। बीसवी सदी में विभिन्न विमर्श सामने आए हैं। जिनमें स्त्री विमर्श ने महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। स्त्री विमर्श ने अनेक विदूषी लेखकों को जनम दिया है। स्त्री विमर्श के संबंध में मैत्रेयी पुष्पा का मानना है कि ''नारीवाद ही स्त्री विमर्ष है, नारी की यथार्थ स्थिति के बारे में चर्चा करना ही स्त्री विमर्ष है।'' जबकि प्रभा खेतान मानती हैं कि ''नारीवाद न मार्क्सवाद है, न पूँजीवाद। स्त्री हर जगह है, हर वाद में है। मगर संस्कृति के विस्तृत फलक पर आज भी वह वस्तुकरण का शिकार है। वस्तुकरण

की इस पारस्परिक प्रक्रिया को पुरूष दृष्टि से देखने और समझने की जरूरत है।''आज भी विभिन्न देशों में नारी मुक्ति आंदोलन विभिन्न रूपों में चल रहा है। इक्कीसवी सदी में नारी मुक्ति के लिए स्त्री सशक्तीकरण पर काम चल रहा है। हलांकि सभी साहित्कारों ने स्त्री को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। प्रेमचंद ने 'प्राणियों के विकास में नारी को ही पुरूषों की अपेक्षा श्रेष्ठ माना है।' वहीं जैनेंद्र ने भी नारी को 'घर का आधार' मानते हुए महत्वपूर्ण माना है। मैत्रेयी पुष्पा के संदर्भ में राजेंद्र यादव ने कहा है, ''मैत्रेयी ने महिला लेखन को ड्राइंग,बेडरूप, दफ्तरों से निकालकर उन गॉवों–कस्बों में पहुंचा दिया है जो अब तक पिकनिकियों या प्रतिबद्ध समाज–सेविकाओं के माध्यम से ही हम तक पहुंचता था।''

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में सिर्फ नागरी जीवन जी रही महिलाओं के व्यक्त नहीं किया गया बल्कि गॉव में रहनेवाली नारी का चित्रण भी किया गया है। प्रभा खेतान भी स्पष्ट लिखती है, ''अमानवीय विकास के प्रतिमानों को खारिज करता और जनोन्मुख नजरिए को विकसित करना नारीवाद का पहला उदेश्य होना चाहिए।'' स्त्री विमर्श से संबंधित न सिर्फ महिला लेखिकाओं ने लिखा है बल्कि प्रेमचंद, निराला, मोहन राकेश, राजेंद्र यादव आदि ने भी अपने साहित्य में नारी विमर्ष को उठाया हैं। महिला लेखिकाओं में मालती जोषी, उषा प्रियंवदा, चित्रा मुद्‌गल, मनु भंडारी, कृष्णा सोबती, नासिरा शर्मा, महरून्निसा परवेज, आदी लेखिकाओं का योगदान न सिर्फ सराहनीय है बल्कि महत्वपूर्ण भी है।

सामाजिक समस्याओं को उठाने के लिए उपन्यास एक ऐसी सशक्त विधा हैं जिसमें सामाजिक जीवन के यथार्थ का असली चित्रण सरलता के साथ हो जाता है। हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श का सूत्रपात प्रेमचंदजी के उपन्यासों से माना जाता है। इस समय के उपन्यासों में महिलाओं की पर्दा प्रथा, दहेज, प्रताड़ना आदि समस्याओं को चित्रित किया जाने लगा था। प्रेमचंदजी के 'निर्मला' उपन्यास में दहेज प्रथा से पीड़ीत निर्मला का चित्रण मिलता है तो 'प्रतिज्ञा' उपन्यास में विधवा समस्या को दर्शाया गया है। 'सेवासदन' उपन्यास में विश्याओं की समस्याओं को चित्रित किया गया है। प्रेमचंद के बाद यशपाल का नाम आता है। 1960 के बाद उपन्यासों में 'आधुनिकतावादी' विचारधारा प्रमुखता से उभर कर आई है। इस युग में नारी विमर्श आंदोलन सशक्त रूप में उभरकर सामने आया है। जैनेंद्र के 'कल्याणी' और 'सुखदा' उपन्यास स्त्री के अस्तित्व को उजागर करते है। उसके बाद मन्नू भंडारी का 'एक इंच मुस्कान' उपन्यास भी स्त्री विमर्श को लेकर उभरा है। मोहन राकेश का 'अंधेरे बंद कमरें, उपन्यास को भी स्त्री विमर्श का उपन्यास कहा जा सकता है।

साठोत्तरी उपन्यास लेखन में 'पुरूषों की अपेक्षा महिलाएं अपनी संवेदनाएं अधिक प्रभावी तरीके से अभिव्यक्त कर सकती है' पहलू पर ध्यान दिया गया। इस काल में महिला लेखिकाओं में कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा , प्रभा खेतान जैसी लेखिकाओं ने स्त्री की समस्याओं और संवेदनाओं को वर्णित किया। कृष्णा सोबती के 'जिन्दगीनामा', 'मित्रोमरजानी', 'सुरजमुखी अंधेरे के ' आदि उपन्यास चर्चित हो चुके हैं। इन उपन्यासों में स्त्री–पुरूष संबंधों को प्रदर्शित किया गया है। इसी समय की दूसरी उपन्यासकार 'उषा प्रियंवदा' ने भी स्त्रियों का अकेलापन, कुंठा, निराशा, मनोंद्वंद्व आदि समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित किया है। इसी कड़ी में मालती जोशी

का 1976 में प्रकाशित 'पाषाण युग' उपन्यास भी स्त्री की मनोव्यथा को चित्रित करता है। 1978 में प्रकाशित 'समर्पण का सुख' उपन्यास दांपत्य जीवन आधारित है। 'सहचरणी' में दो बहनों की कथा है। 'प्रथा खेतान' का 'पीली आंधी' उपन्यास में भी शोषित स्त्री की कहानी है। ममता कालिया, मन्नू भंडारी आदी लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में स्त्री के सच को परोसा हैं । आजकल 'नासिरा शर्मा' के उपन्यास भी चर्चित हो रहे हैं। नासिरा शर्मा ने स्त्री की समस्या को वैश्विक स्तर पर उकेरा है। 'सात नदिया एक समंदर,' 'शामी कागज' आदि इनके सशक्त और प्रसिद्ध उपन्यास हैं।

वर्तमान हिन्दी उपन्यासकारों में विचारों की परिपक्वता और गहन मानवीय को उकेरने की कला में मैत्रेयी पुष्पा चर्चित हैं । उनके उपन्यास 'इदन्नमम' में बुंदेलखंडी ग्रामीण समाज में उभरती स्त्री–चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति हुई हैं। मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' में प्रेम के माध्यम से उन स्त्रियों को लेकर लिखा है जो सदियों से अपने अधिकारों से वंचित हो शोषण का शिकार हो रही हैं। मंदा की माँ प्रेम का अपहरण करनेवाले रतन यादव का एक मात्र उदेश्य उसकी संपत्ति हथियाना हैं । लेकिन जब वह घर से गायब होती है तब पुरूष ही नहीं स्त्री वर्ग भी उस पर कामवासना का आरोप लगाती हैं। 'इदन्नमम' में कुसुमा का उदाहरण स्त्री शोषण की चरम सीमा है। कुसुमा को गरीब घर की होने के कारण छोड़ दिया जाता हैं। बढ़ते विवाद के वर्तालाप से एक वाक्य प्रस्तुत है, ''खून पी जाऊँगा। इस दुष्टनी का या पीट–पीट कर गाँव से बाहर कर दूँगा कुलटा को''। इतना होने के बाद भी वह बच्चे को जन्म देती है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत है। मैत्रेयी पुष्पा की स्त्रियाँ समाज और रूढ़ियों के साथ–साथ पुरूषों मानसिकता से लड़ाई लड़ती नजर आती है। 'इदन्नगम' उपन्यास की नायिका अकेले ही सारे पुरूष समाज से टकरा जाती है। अन्याय और अत्याचार को वह खामोशी से सहन नहीं करती। 'इदन्नमम' में ही परित्यक्ता कुसुमा का दाऊ जी के साथ संबंध रखना बहुत बड़ा कदम है। वह कहती है ''बिन्नु यह जल निर्मल है या मैला ? पवित्र है या पाप का ? इमरत है विस? नहीं जानते हम। तुम्हारी रामायन में लिखा भी होगा तो लिखनेवाला यह नहीं जानता है कि आदमी जब प्यासा होता है, प्यास से मर रहा होता है तो कहाँ देखता है, कहाँ सोचता है, कहाँ करता हैं कोई भेद? कोई अंतर? '' उसके मन में बनाए गए संबंध को लेकर कोई अपराधबोध नहीं है बल्कि पक्ष में तमाम अकाट्य तर्क हैं। जब वह गर्भवती होती है तब भी डरती नहीं है। ''जैसे ही पूछा कि भाईयों का कौल खाकर बता कुसुमा, यशपाल कबहूँ नहीं आया तेरे हिरकाँय? कुसुमा भाभी ने घूँघट में एक नजर सास को देखा, फिर सबको निहारा और सिर हिला दिया, अर्थात् नहीं, कभी नहीं।'' कुसुमा के मन में कोई अपराधबोध नहीं है। 'इदन्नमम' में कुसुमा ने परंपरा को चुनौती दे दी है। कुसमा भाभी के चरित्र द्वारा मैत्रेयी पुष्पा ने नारी की दृढ़ संकल्पना को निर्मित किया है। परित्यक्ता कुसुमा जन्म से रूग्ण दाउजी से प्रेम करने लगती है। ''बिन्नु सौ बातों की एक बात है, नाते संबंध का नाम बनाए, गढ़े बेकार है। साँचा नाता तो प्यास और पानी का है।'' कुसुमा पारंपरिक समाज और उसकी वर्जनाओं को चुनौती देती नजर आती हैं। उसे समाज का विरोध सहना पड़ता है जिसे वह सह लेती है । उसका मानना है कि जब देह है तो इसकी आवश्यकता की पूर्ति भी करनी होगी। यही नहीं बल्कि जब कैलास मास्टर किशोरी मंदा के साथ बलात्कार करता है तो कुसुमा भाभी उसको भी सहारा देती है। वह कहती है,

''अपराधी तो वह है, जिसने यह अजस.........छल–बल से कुकरम ....छुतैला और अपवित्तर भी हुआ –बुढ़िया कैलास मास्टर, उसकी जान हुई मेली। '' कुसुमा मंदा को समझाती है कि स्त्री और पुरूष दोनों का मान–सम्मान बराबर होना चाहिए। पुरूष द्वारा बलात्कार होने पर स्त्री कैसे अपवित्र मानी जा सकती है, जबकि पुरूष कोई अपवित्र नहीं मानता । कुसुमा भाभी इसके खिलाफ आवाज उठाती है। मैत्रेयी पुष्पा का लेखन स्त्री विमर्श को मुखर अभिव्यक्ति प्रदान करता है। वह स्वतंत्र स्त्री की अस्मिता और उसके सशक्तीकरण की एक ठोस जमीन तैयार करता है।

सूर्यबाला का प्रमुख उपन्यास 'यामिनी की कथा भी स्त्री मन की तीव्र संवेदनात्मक धरातल पर दौड़ती है। उपन्यास में यामिनी मानसिक संघर्ष से जुझती हुई चित्रित की गई है। वह मामूली स्त्री नहीं है, वह अपने पति विश्वास से शारीरिक से अधिक मानसिक प्यार चाहती है। विश्वास को भरोसा है कि वह अपनी पत्नी की सभी ख्वाहिशें पूरी कर रहा है। जितनी कर रहा है उससे अधिक देने के लिए उसके पास कुछ है भी नहीं। किंतु यामिनी फिर भी शिकायत करती है, ''तो मेरी सबसे बड़ी विडंबना यही है कि मैं आपके जीवन में तब आई जब आपके पास देने लेने के लिए कुछ है ही नहीं।'' यामिनी की बात सुनकर विश्वास को गुस्सा आ जाना स्वाभविक है। उसे यामिनी उसके पुरूषत्व को चुनौती देती लग रही है। हालात ताड़कर यामिनी समझाती है, ''सुनिए मैं शरीर की बात नहीं कर रही। आपके शरीर ने मुझे बहुत कुछ दिया, लेकिन पुरूषत्व को सिर्फ शरीर की सीमा में बाँधकर नहीं देखती। आप भी ऐसा कर उसकी बेइज्जती मत कीजिए। पुरूषत्व की सीमा शरीर से कहीं ज्यादा भव्य होती है। मैं उसी भव्यता और ऊँचाई की बात कह रही हूँ।'' यामिनी की यह बात विश्वास को समझ ही नहीं आती।

मृदुला गर्ग के उपन्यास 'कठगुलाम' में भी स्त्री मुक्ति एवं चेतना का प्रखर रूप प्रकट होता है। इस उपन्यास में दो स्त्रियां असीमा तथा स्मिता हैं। दोनों ने मिलकर एक सहकारी संस्था का निर्माण किया है परंतु पुरुष वर्ग उनके इस कार्य में कोई सहयोग नहीं करते हैं। असीमा पुरूषों की मानसिकता को जानती है। वह कहती है–'इस देश में औरते या माँ हैं या पैर की जूती। इनसे काम कराने के लिए अम्मा बनना जरूरी है क्या, असीमा के माध्यम से लेखिका द्वारा कहलाई गई यह बात स्त्री विमर्श को प्रबलता के साथ दर्शाता है। वह मात्र मातृत्व को ही स्त्री जीवन की उपलब्धि मानने से इंकार करता है।

कृष्णा सोबती का उपन्यास 'समय सरगम' में लेखिका बूढ़े होने की गरिमा के बीच भी जीवन का एक–एक क्षण पूरी निजता से जी लेने की चाह एवं विचारों का गंभीर स्वर है। कृष्णा सोबती के सत्तर वर्षीय जीवन की जिंदादिली की कथा नायिका आरव्मा के चरित्र में स्पष्ट झलकती है।

नासिरा शर्मा के चर्चित उपन्यास 'शल्मली' में शादी के बाद शाल्मली का पति नरेश ताना मारते हुए बार–बार दोहराता है कि ''तुम ठहरी एक आधुनिक विचार की महिला......विचारों में स्वतंत्र, व्यवहार में उन्मुक्त, तुम्हारे संस्कार........''नरेश का यह वाक्य सुनते –सुनते शाल्मली आधुनिक शब्द से घृणा करने लगी थी। शाल्मली की कहानी मार्मिक है। उपन्यास की यह पात्र समय से पहले ही जीवन संघर्ष में कूद पड़ी थी । कम उम्र में ही

कामकाजी बन गयी थी। उसमें गंभीरता आ चुकी थी। नरेश पत्नी की जिम्मेदारी मात्र घरेलू काम को ही कामकाजी बन गयी थी । उसमें गंभीरता आ चुकी थी। नेरश पत्नि की जिम्मेदारी मात्र घरेलू काम को ही समझता है । वह अपने दोस्तों के लिए भोजन बनाने पर भी उसमें हाथ बँटने को तैयार नहीं होता हैं। वह समझता है कि पत्नी पति के अधीन ही रहनी चाहिए, परिस्थितियां कुछ भी हों । तभी तो शाल्मली बुखार होने के बावजूद नरेश के दोस्तों के लिए खाना बनाती है। नेरश को पत्नी की बीमारी से अधिक चिंता दोस्तों की है। खाना खाकर दोस्त जाने के बाद वह कहता है ''घर औरत का होता है, वह जाने। कमाना मर्द का काम है, वह मैं करता हूँ । आफिस के काम में तुम्हारी सहायता लेता हूँ क्या? ओ....के....गुड नाईट।'' नासिरा शर्मा के एक और उपन्यास 'ठीकरे की मँगनी' की नायिका महरूख भी पुरूष अहंकार से दुखी है। महरूख मजबूरी में भी समय के साथ समझौता करना पंसद नहीं करता है। वह परिस्थितियों से संघर्ष करती हुई नजर आती है। 'ठीकरे की मँगनी' में नासिरा शर्मा ने महरूख की संघर्ष यात्रा का सजीव और संघर्षभरा जीवन चित्रित किया है। महरूख कमजोर बच्चों को शाम को घर में बुलाकर पढ़ाती थी। महरूख के सामने सिर्फ स्कूल ही जिंदगी की मंजिल थी। उसका यह आत्मसमर्पण देखकर डॉ0 विमला कहती है ''मेरा विश्वास है कि तुम जरूर कोई ऐसी महान आत्मा हो, जो बिरले ही धरती पर जन्म लेती है। '' ठीकरे की मँगनी' में महरूख के भीतर अकेलेपन की पीड़ा, संत्राय या कुंठा को कोई स्था नहीं है। वह जानती है कि उसकी जिंदगी अगली पीढ़ी के लिए है।

मेहरुन्निसा परवेज़ नारी शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने वालों में खास लेखिका है । मेहरून्निसा परवेज़ ने अपने उपनयासों के माध्यम से स्त्री जीवन का जो यथार्थ चित्रण किया है। मेहरून्निसा परवेज़ के उपन्यास 'कोरजा' की नायिका फातिमा की स्थिति से स्पष्ट हो जाता है कि स्त्री जीवन आज भी बंधनों से मुक्त नहीं है। पृथ्वी पर अधिकार के साथ ही संपत्ति के अधिकार की अवधारणा भी विकसित हुई। अपने स्वार्थ साधने के लिए पुरूष ने स्वामित्व की भावना को विकसित किया। जिसे आगे ज्यों का त्यों प्रचलित कर लिया गया। स्त्री के मातृत्व को अपने सृजनात्मकता की क्षमता के आगे कम आंकना प्रांरभ किया गया। पुरूष ने मातृ सत्तात्मक समाज के खात्मे के साथ ही , स्त्री जाति को अपने अधीन समझ लिया। सत्ता के इस परिवर्तन के ए गेलस जाति की बहुत बड़ी हार मानते है। पुरूष द्वारा संपत्ति का अधिकारी भी पुत्रों को बनाया गया। इसके साथ–साथ स्त्रियों पर अंकुश लगााने, उन पर अनुशासन के कठोर नियम बनाए गए। पुरूष सत्ता ने स्त्री को चुनाव, निर्णय लेने एवं स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अफसरों से वंचित कर दिया । किंतु स्त्री ने कभी भी पुरूष के अधिकारों के तुल्य अपने मूल्यों अधिकारों को स्थापित करने की चेष्टा नहीं की, स्त्रियों से हमेशा अपेक्षा की गई कि वह इन मूल्यों को बचाए रखें। मानसिक रूप से गुलाम स्त्रियों को पुरूष समाज आज भी पसंद कर रहा है।

मृणाल पांडे ने अपने उपन्यास 'विरूद्ध', 'रास्तों पर भटकते हुए', 'पटरंगपुर पुराण', 'देवी', 'अपनी गवाही', 'सहेला रे' में स्त्री –चेतना को मुखर किया है। मृणाल पांडे मानती हैं कि आज की नारी लेखन हमारी मानसिक तुष्टि के लिए एक विस्फोट द्रव्य के समान है। हमारी शांति को भंग कर देनेवाला और कष्टदायक है। यह हमारी प्राचीन मान्यताओं और मानसिक जड़ता को गति देनेवाला एक ऐसी विध्वंसक शाक्ति के रूप में प्रकट हुआा है, जो हमें फिर से नए निर्माण के लिए प्रेरित करता है।

प्रभा खेतान का चर्चित उपन्यास है 'छिन्नमस्ता'। इस उपन्यास में मारवाड़ी परिवार की कहानी है जिसमें परिवार की एक–एक स्त्री अपने ही घर में बेगानी होती नजर आती है। ये सभी स्त्रियां भाई या पति द्वारा पीड़िता हैं। स्त्री के प्रति यह उत्पीड़न 'छिन्नमस्ता' में प्रभा खेतान ने कुशलता के साथ चित्रित किया है।

लेखिका राजी सेठ के उपन्यास 'तत्सम' में पितृसत्तात्मक व्यवस्था को दर्शायागया है। जिसके साये में उपन्यास की नायिका वसुधा का द्वंद्व प्रदर्शित होता है। परंपराओं के नाम पर स्त्री को चारदीवारी में बंदी बनाकर उसे दासी की भूमिका उपन्यास में स्पष्ट झलकती है।

उषा प्रियंवदा के उपन्यास 'अंतर्वशी की नायिका 'वाना' एक अति साधारण परिवार की लड़की है, जो माँ के अभाव में गरीब पिता और बाबुओं के संरक्षण में पलती है। वह मात्र दसवीं तक ही पढ़ सकी है परन्तु उसका विवाह अमेरिका में रहने वाले 'निवेश' के साथ कर दिया जाता है। वाना सुन्दर है इसलिए उसके पास 'रूप और सौंदर्य के सिवा कुछ भी नहीं है। उपन्यास में लेखिका स्पष्ट कहती है कि–बुद्धिहीन सुदंर स्त्री क्या है, अलोनी छुइमा। इस उपन्यास में भी स्त्री मुक्ति से जुड़े प्रश्न उठाए गए हैं।

स्त्री के स्व की चिंता और उसकी अस्मिता का बोध कराने वाले विचारों को चिंतन की दृष्टि से 'स्त्री –विमर्श' कहा गया है। स्त्री के प्रति सदियों से होते आये शोषण और गैर बराबरी ने ही 'स्त्री विमर्श' को जन्म दिया है। मृणाल पांडे मानती हैं कि 'नारी विमर्श कतई स्त्रियों के वृहृतर समाज से अलग–अलग रखकर देखने और हर क्षेत्र में पुरूषों के खिलाफ उन्हें प्रोत्साहित करने का दर्शन नहीं है, यह तो एक समग्र दृष्टिकोण है। हजारों सालों से पितृसत्तात्मक मनःस्थिति का भोग बनी स्त्री आज मुक्त होना चाहती है। वह उस जमीन की तलाश में है। जिसमें पुरूष प्रधान मनःस्थिति की बू नहीं आती हो। आज का स्त्रीवादी साहित्य इसी प्रस्तुत का प्रमाण है।'उपन्यास लेखिकाओं ने स्त्री को मशीन से मानव बनाने का प्रयास किया है। महिला उपन्यासकारों के उपन्ययासों में स्त्री चेतना, स्त्री मुक्ति, शोषण, समानता, स्वतंत्रता, वैवाहिक एवं पारिवारिक समस्या, आर्थिक पराधीनता एवं स्वाधीनता सभी 'स्त्री विमर्श' से जुड़े हुए पक्ष हैं जिन्हें चित्रित करने में महिला उपन्यासकार सफल हैं। स्त्री विमर्श को पल्लवित करने वाली मैत्रेयी पुष्पा कहती हैं, ''आनेवाली सदी की माँग है कि पुरूष मानसिकता में परिवर्तन आए और वह बेझिझक किसी भी आशंका और असुरक्षा से मुक्त होकर आती हुई स्त्री का स्वागत करे। मेरे विचार से यह सदी स्त्री के अस्थत्व की थी, अगली शताबदी उसके व्यक्तव की होती ।'' महिला उपन्यासकारों ने स्त्री चेतना और उसकी मुक्ति के लिए जो प्रश्न खड़े किए हैं उन्हें 'स्त्री विमर्श' के रूप में देखा जा सकता है। 'स्त्री विमर्श से संबंधित अधिकांश उपन्यासों की रचना महिला उपन्यासकारों ने ही की है। हिंदी उपन्यासों में स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रदर्शित किया गया है। 'स्त्री विमर्श' संबंधी स्त्री लेखिकाओं द्वारा जो लेखन हुआ है। वह अत्यंत संवेदनशील और चिन्तनीय है जिसपर अभी निरन्तर चिन्तन और स्त्रियोंकी स्थिति में सुधार की आवश्यकता है। यह उपन्यास पाठकों के लिए मात्र मनोंरजन नहीं बल्वि स्त्रियों के अधिकार और उनके सम्मान के प्रति चेतना के साधन भी हैं। उपन्यास विधा के माध्यम से 'स्त्री विमर्श ' स्त्री को उसका अधिकार और सम्मान दिलाने की बात करता है। आज की स्त्री शिक्षित है और अपने विचारों को न

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

सिर्फ मुक्त रूप से व्यक्त कर रही हैं बल्कि पुरूष से आगे निकलकर विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रही हैं। 'स्त्री विमर्श' के इस आंदोलन में न सिर्फ शिकायतों, क्रोध, आक्रोश को व्यक्त किया गया है बल्कि यह जीवन के प्रति उसके विशिष्ट दृष्टिकोण, जिम्मेदारियों और स्वस्थ समाज के निर्माण को भी चित्रत करता है। अन्त में यह कहा जा सकता है कि 'स्त्री विमर्श' अपनी बात पाठकों के माध्यम से समाज में पहुंचाने में सफल रहा है।

हिंदी साहित्य में महिला लेखन के द्वारा उपलब्ध विभिन्न कहानियों, कविताओं तथा आत्मकथाओं में स्त्री की दैहिक पीड़ा से हटाकर उसकी वर्गीय पीड़ा, जातीय एवं लैंगिग पीड़ा का वास्तविक स्वरूप क्यों नहीं दिखाया जा रहा है?साठ के दशक में पुरुष वर्चस्व की सामाजिक सत्ता और संस्कृति के विरूद्ध उठ खड़े हुए स्त्रियों के प्रमुख आंदोलनों को नारीवाद आंदोलनों का नाम दिया गया। नारीवादी आंदोलन एक राजनीतिक आंदोलन है जो स्त्री की सामाजिक, आर्थिक, दैहिक स्वतंत्रता का पक्षधर है। स्त्री मुक्ति का प्रश्न केवल स्त्री मुक्ति नहीं वरन संपूर्ण मानवता की मुक्ति का प्रश्न है। दरअसल यह एक अस्मिता की लड़ाई है। इतिहास ने हमें यह बताया भी है कि आधी आबादी की शिरकत के बगैर प्रांतीय सफल नहीं हो सकती है। समाज में स्त्री –पुरूष एक–दूसरे के पूरक माने जाते है। किसी एक के अभाव में दूसरा अस्तित्व विहीन हो जाता है, फिर भी पुरूष समाज ने महिलाओं को अपने बराबर का स्थान प्रदान नहीं किया। इस स्थिति ने शिक्षित नारी वर्ग को आंदोलनकारी बना दिया। अपने अधिकारों के लिए समानता के लिए यही ज्वलंत मुदा नारी विमर्श के रूप में दृष्टिगोचर हुआ है । पुरातत्व समय से ही नारी की दशा दयनीय एंव सोचनीय थी। स्त्रियों की दशा को देखकर विवेकानंद कहते हैं ''स्त्रियों की अवस्था को सुधारे बिना जगत के कल्याण की कोई संभावना नहीं है पक्षी के लिए एक पंख से उड़ना संभव नहीं हैं ।'' निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि नारी आदिकाल से पीड़िता एंव शोषित रही है पुरूष प्रधान समाज मान मर्यादा की आड़ में सदा उसे दबाकर रखना चाहा । कभी घर की चार दीवारों के अंदर कैद ही रखा । इन्ही परंपरागत पितृसत्तात्मक वेडियो को लांघने की लड़ाई है स्त्री विमर्श।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1 ममता कालिया स्त्री विमर्श के संतुलन बिंदुपृष्ठ संख्या

2 स्त्रीत्ववादी विमर्श –समाज और सहित्य : क्षमा शर्मा –पृ0सं0 ,101

3 हंस – मार्च 2000 –पृ0 सं0 45

4 स्त्री आकांक्षा के मानत्रित –गीताश्री–पृ0सं0 60

5 हंस–अक्तूबर 1996, पृ0सं0 75

6 चर्चा हमारी –मैत्रेयी पुष्पा – पृ0सं0 71

7 हिंदी साहित्य में नारी, डॉ0 अभुता पाण्डे, अकादमिक प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2010, पृ0सं0 25

8 नारी विमर्श दशा और दिशा, संपादक—डॉ0 एम फिरोज खान, आकाश पब्लिकशर्स ॲ0ड डिस्ट्रीब्सूटर्स, गाजियाबाद, प्रथम संस्करण, पृ0 13

9 मैत्रेयी पुष्पा —इदन्नमम — पृ0सं0 140

10 मैत्रेयी पुष्पा —इदन्नमम — पृ0सं0 192

11 मैत्रेयी पुष्पा —इदन्नमम — पृ0सं0 159

12 मैत्रेयी पुष्पा —इदन्नमम — पृ0सं0 24

13 मैत्रेयी पुष्पा —इदन्नमम — पृ0सं0 108

14 यामिनी कथा — सूर्यबाला— पृ0सं0 32

15 यामिनी कथा — सूर्यबाला— पृ0सं0 33

16 यामिनी कथा — सूर्यबाला— पृ0सं011

17 नासिरा शर्मा — शाल्मली — पृ0 सं0 33

18 नासिरा शर्मा — ठीकरे की मँगनी —पृ0 सं0 146

19 खुली खिडकियाँ — मैत्रेसी पुष्पा — पृ0 सं0 115

20 स्त्री के लिए जगह राजकिशोर

21 स्त्रीवादी वर्मा — समा भार्मा

22 नारी अस्मिताः हिंदी उपन्यासों में सुदा बगा 6 औरत, अस्तित्व और अस्मिता अरविंद जैन

23 समकालीन महिला लेखन डॉ0 ओमप्रकाश भार्मा 8 स्त्रीवादी साहित्य विर्मा जगदीवर चतुर्वेदी

24 हिंदी महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना —डॉ0 उशा यादव

25 आधुनिक कथा साहित्य में नारी स्वरूप और प्रतिमा डॉ0 उमा शुक्ल